रमेश मनोहरा

पर्यावरण संरक्षण की हम सबकी जिम्मेवारी

आज हमें पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनना पड़ेगा। इसका यह मतलब नहीं है कि पर्यावरण को लेकर देश और दुनिया में जागरूकता नहीं बढ़ी है। इस हेतु अपने-अपने स्तर से काम हो रहा है हमने खेती के साथ पर्यावरण पर भी ध्यान देना शुरू कर दिया है। शासकीय मशीनरी के अलावा आम लोगों को जागरूक बनाया जा रहा है। अंततः इसका परिणाम भी कालांतर में मिलने लगेंगे।

5 जून को प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इसके मनाने के पीछे क्या कारण है? क्यों आवश्यकता पड़ी? इसका खास कारण यह है कि जंगल के घने वन कटते जा रहे हैं। इसका प्रभाव पूरे विश्व के पर्यावरण पर पड़ रहा है। इसलिए इसे मनाने की आज आवश्यकता पूरे विश्व को पड़ी है। तब 5 जून 1972 को विकसित देश के नेता स्टाक होम नामक स्थान पर इसी दिन को मिले। और फिर इसी दिन को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का निर्णय लिया। जो आज भी हर वर्ष मनाया जाता है। आज पर्यावरण की समस्या पूरे विश्व की है। फिर भी इस समस्या से निजात नहीं मिली है। पर्यावरण की यह समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पेड़-पौधे जितने आप उगाएंगे पर्यावरण भी संतुलित रहेगा।

मगर अपने स्वार्थ के खातिर आदमी प्रकृति को खत्म करता जा रहा है। पर्यावरण को असंरक्षण करता जा रहा है। प्रकृति भले ही बोलती न हो, मगर अपना रूप विकराल जब कर लेती है, तब आदमी उस पर आक्रमण करता है। यदि आदमी अपने स्वार्थ के खातिर पर्यावरण को उसी तरह नष्ट करता रहेगा। तो इसका खामियाजा हमें अगली कई पीढ़ियों तक भुगतना पड़ेगा। घने जंगल न होने के कारण शेर, चीता, रीछ आदि जानवरों की प्रजातियां लुप्त होती जा रही हैं। पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली क्रियाओं को रोकने वाले कढ़े नियम बनाने चाहिए और उसका पालन भी सख्ती से करना चाहिए। तब कहीं जाकर पर्यावरण को बचाया जा सकता है। मगर इसके लिए कानून के नुमाईन्दों के साथ आम आदमी के मन में भी पर्यावरण के प्रति संवेदना जागे। अपने भीतर ऐसे संस्कार पैदा करें कि वापस घने वनों के साथ हरियाली लौट आए। जिस दिन हरियाली लौट आएगी

वनों की अंधाधुंध कटाई से प्रभावित होता पर्यावरण

पर्यावरण संरक्षण की हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है

पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए खुद गंदगी न करेंगे, न किसी को करने देंगे

उस दिन पर्यावरण फिर हरा-भरा हो जाएगा।

जब-जब भी पर्यावरण संरक्षण की बात होती है तब दोनों ही पक्षों के ज्यादातर अपने सारे तर्क चरम सीमा पर होते हैं। मगर होते वहीं ढाक के तीन पात। आज पूरी दुनिया ही इस पर्यावरण से पीड़ित है। मगर उसका परिणाम उतना नहीं मिल रहा है, उस पर सक्रियता से आज काम करने की जरूरत है। किसी क्षेत्र में उद्योग लगाने अथवा फोर लेन की सड़कें बनाने के लिए हम उस जगह और उन रास्तों के कई हजार पेड़ काट डालते हैं। मगर कहीं अन्यत्र काटे गए दुगने पेड़ लगाने पड़ेगे इस मुहिम पर यदि आप चलेंगे तब निश्चित आप पर्यावरण संरक्षण कर सकेंगे। मगर अफसोस यह है कि हम पौधे तो युद्ध स्तर पर अन्य जगह रोप देते हैं मगर उसकी सुरक्षा नहीं कर पाते।

अतः आज हमें पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनना पड़ेगा। इसका यह मतलब नहीं है कि पर्यावरण को लेकर देश और दुनिया में जागरूकता नहीं बढ़ी है। इस हेतु अपने-अपने स्तर से काम हो रहा है हमने खेती के साथ पर्यावरण पर भी ध्यान देना शुरू कर दिया है। शासकीय मशीनरी के अलावा आम लोगों को जागरूक बनाया जा रहा है। अंततः इसका परिणाम भी कालांतर में मिलने लगेंगे। हम जानते हैं कि पेड़-पौधे और वनस्पतियों में कई ऐसे पौधे हैं जो हमारे लिए दवा का काम करते हैं। मेरे इस दोहे से जिसे समझाया जा सकता है-

नीम, तुलसी, पीपल भी, करें दवा का काम।
इसको बचाने का दे, सबको ही पैगाम।।

इस तरह हम कह सकते हैं कि पर्यावरण संरक्षण की हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी को देश का हर नागरिक समझ जाएगा। तब पर्यावरण हरा-भरा रहेगा। हरे वृक्ष लह-लहाएंगे। वर्षा भी पर्याप्त होगी। जब वर्षा पर्याप्त होगी तब समुच्च धरती पर हरियाली छा जाएगी।

अर्थात् पेड़-पौधे हमारे लिए औषधि का काम करते हैं। हमें यह भी पता है आज जलवायु में परिवर्तन हो रहा है, प्रकृति का पूरा ऋतुचक्र बदल रहा है। इसका खास कारण यह है कि हमने नदियों, पहाड़ों को तबाह किया है। जहां पहाड़ों की परिक्रमा तीर्थाटन के लिए होती थी, वह पर्यटन के लिए होने लगी। अर्थात इन स्थलों पर प्राकृतिक नियमों की अवहेलना होने लगी। इन स्थानों पर शराब, और कबाब चलने लगे। कहीं पर कुछ भी फेंक कर गंदगी कर दी, जल के प्रति पूजनीय भाव ऋषि मुनियों के जमाने में रामायण व महाभारत काल में रहा करता था, वह भाव समाप्त होता जा रहा है।

अब प्रश्न यह है कि हम क्या करें? उत्तर यही है कि हम अपना व्यवहार बदलें इस बात को हर व्यक्ति समझ जाएगा। खुद गंदगी न करेंगे, न किसी को करने देंगे। इससे पर्यावरण भी खराब न रहेगा। हमें शुद्ध व ताजी हवा मिलेगी। इस हेतु प्रयास जरूर किए जा रहे हैं। मगर ये प्रयास अंतर्मन से होंगे तभी हम पर्यावरण को बचा सकेंगे। हमें अपनी जीवनशैली बदलनी पड़ेगी वृक्षों के पोषण के बारे में सोचना पड़ेगा। मगर अफसोस इस बात का है कि जिस वन अधिकारी को वन संरक्षण के लिए रखा गया है उसकी करतूत मेरे इन दोहों में देखिए-

अगर वन अधिकारी ही, वन काटे-भरपूर।
पर्यावरण की होवे, कहां समस्या दूर।।

**

भू-माफिया पर यारों, लगे नहीं यदि रोक।
पर्यावरण विनाशक, मनाते रहो शोक।।

इस तरह हम कह सकते हैं कि पर्यावरण संरक्षण की हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी को देश का हर नागरिक समझ जाएगा। तब पर्यावरण हरा-भरा रहेगा। हरे वृक्ष लह-लहाएंगे। वर्षा भी पर्याप्त होगी। जब वर्षा पर्याप्त होगी तब समुच्च धरती पर हरियाली छा जाएगी।

अतः अब यही संकल्प लें कि पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकें, पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाएं। क्योंकि आज जलवायु, पेड़-पौधे, तथा सम्पूर्ण जीव जंतुओं से मिलकर बनने वाला समस्त परिवेश जिसका सीधा प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक क्रिया-कलाप पर पड़ता है, पर्यावरण कहलाता है। अतः आज समय आ गया है कि हम ऐसे वृक्षों को लगाएं, जिसके द्वारा जीवन दायिनी औषधियां प्राप्त होती हैं। ऐसे में प्रत्येक आदमी का यह कर्तव्य बनता है कि वृक्षा रोपण संस्कार के रूप में लेते हुए धार्मिक पर्वो पर वृक्षारोपण करें। कहा गया है कि वृक्ष पृथ्वी के आभूषण हैं। क्योंकि वृक्ष हमें जीवनदायी ऑक्सीजन के साथ-साथ फूल-पत्ते, लकड़ी प्रदान करते हैं। वृक्ष हमारे पर्यावरण को शुद्ध ही नहीं करते हैं बल्कि जीवन के लिए उपयोगी प्राणवायु भी उपलब्ध करा रहे हैं। जब समुचित पृथ्वी की गोद हरियाली से भर जाएगी, उस दिन जीवन में हमें असीम आनन्द की प्राप्ति होगी। मेरे इस दोहे से समझा जा सकता है-

उस दिन जीवन में रहे, रमेश तुझे मोद।
हरियाली से भरी रहे, माँ धरती की गोद।।

संपर्क करें:
रमेश मनोहरा
शीतला माता गली, जावरा,
जिला रतलाम (म.प्र.)-457226
मो.9479662215